ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 12 कुल पृष्ठ-8 27 फरवरी से 4 मार्च, 2020 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 फा. शु.-05

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार को बचाने के लिए गुरुकुल बचाओ हुंकार रैली का हुआ ऐतिहासिक आयोजन

आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासियों, नेताओं, गुरुकुलों के आचार्यों एवं देशभर से पधारे आर्यजनों द्वारा किया गया शक्ति प्रदर्शन

गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति के तत्वावधान में दिनांक 23 फरवरी, 2020 को आर्य समाज के संरक्षण में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं तथा संगठनों ने एक विशाल हुंकार रैली निकालकर गुरुकुल को बचाने का संकल्प लिया। यह विशाल रैली गुरुकुल परिसर से लेकर मजिस्ट्रेट कार्यालय तक निकाली गई।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी विधायक हरिद्वार, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी यज्ञमुनि जी, पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी, स्वामी चेतनानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी कर्मवीर जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी अखिलानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, पूर्व सांसद प्रो. रासा सिंह रावत, श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष श्री शिव कुमार शास्त्री, डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस., आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, मंत्री श्री दयाकृष्ण कांडपाल, मा. सुमन्त सिंह आर्य किसान नेता, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य निदेशक मिशन आर्यावर्त यू-ट्यूब चैनल, डॉ. वीरेन्द्र पंवार प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार, श्री हाकम सिंह आर्यवंशी पूर्व प्रधान जिला सभा हरिद्वार, श्री मानपाल राठी छाया प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, श्री दिलबाग सिंह आर्य मंत्री आर्य समाज घरौंडा, आचार्य धनंजय गुरुकुल पौंधा, आचार्य विजयपाल आर्य, आर्य निर्मात्री सभा, ब्र. रामफल आर्य सहित सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

रैली को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि बीते कुछ दिनों से कुछ अवांछित तत्त्व महाविद्यालय भूमि को खुर्द-बुर्द करने की साजिश रच रहे हैं और गुरुकुल महाविद्यालय की भूमि को कब्जाने का प्रयास कर रहे हैं जिसे किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुल की यह भूमि कोई आम भूमि नहीं है। इस गुरुकुल के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देते हुए गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है। इस महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करके सैकड़ों मूर्धन्य विद्वान शास्त्रार्थ महारथी, राष्ट्रभक्त, समाजसेवी एवं राजनेता अपने-अपने कार्यों से गुरुकुल का नाम रोशन कर रहे हैं। ऐसी पवित्र भूमि पर कोई सरलता से कब्जा कर लेगा ऐसा सोचना भी एक दिवास्वप्न के समान है। इसको बचाने के लिए आर्य समाज बड़े से बड़ा आन्दोलन करने से भी परहेज नहीं करेगा। स्वामी जी ने कहा कि जिन लोगों का आर्य समाज से कोई लेना-देना नहीं है

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य मुसाफिर पं. लेखराम

आर्यों के लिए पण्डित लेखराम जी का सबसे घनिष्ठ परिचय यह है कि वह एक समय 'आर्य गजट' के सम्पादक रहे थे। यों उनका नाम आर्य समाज के मूर्धन्य कर्मवीरों में और अमर हुतात्माओं में है। उन्होंने यह जानते हुए विधर्मियों का खण्डन किया कि इसके फलस्वरूप उन्हें अपने प्राण भी देने पड़ सकते हैं। परन्तु इस कारण वह कभी भी झिझके नहीं।

उनका जन्म सन् 1858 में अविभक्त पंजाब के झेलम जिले के सैयदपुर गांव में हुआ था। उनके पिता मेहता श्री तारासिंह सामान्य स्थिति के ब्राह्मण थे।

आर्यत्व की बड़ी प्रगति

यह सोच कर आज आश्चर्य और आनन्द होता है कि आर्यसमाज के प्रयत्नों के फलस्वरूप भाषा के मामले में देश कितनी लम्बी मंजिल तय कर आया है। उस समय हिन्दी, संस्कृत का कहीं नाम ही नहीं था। सब विद्यालयों में पढ़ाई उर्दू और फारसी में होती थी। लेखराम जी ने भी इन्हीं में शिक्षा पाई। वह अत्यन्त मेधावी थे, परन्तु शिक्षा बहुत दूर तक चली नहीं। आर्थिक परिस्थितियों के कारण पढ़ाई बीच में छोड़कर ही वह सत्रह वर्ष की आयु में एक सिपाही के रूप में पुलिस में भर्ती हो गए।

पंडित लेखराम जी जिस भी काम में जुट जाते थे, उसे पूरी तन्मयता से करते थे। इस कारण उनके अफसर उनसे प्रसन्न थे। पदोन्नति करके उन्हें सार्जेंट बना दिया गया।

अध्यात्म में रूचि

परन्तु लेखराम जी का मन आध्यात्मिक विषयों में अधिक लगता था। वह विचारक थे। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के क्रांतिकारी विचारों का भी उन पर प्रभाव पड़ा। सन् 1880 में वह पेशावर में थे। वहीं उनका आर्य समाज से सम्पर्क हुआ। वह स्वामी दयानन्द जी के विचारों से इतने प्रभावित हुए कि पुलिस की नौकरी छोड़कर आर्य समाज के प्रचार को ही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

अहमदिया मत का खण्डन

उन दिनों मुसलमानों का एक नया सम्प्रदाय चला था अहमदिया सम्प्रदाय। उसका मुख्य केन्द्र कादियान में था, इसलिए इन्हें कादियानी भी कहा जाता था। इनका गुरु स्वयं को पैगम्बर कहता था। पं. लेखराम जी ने अहमदिया सम्प्रदाय की पोल खोलते हुए, तकजीब बुराहीन अहमदिया' नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि कई पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों को मुसलमानों ने भी पसन्द किया और अहमदिया लोगों का बहिष्कार कर दिया। इससे अहमदिया लोग पंडित लेखराम जी के शत्रु हो गए।

कुछ समय बाद पंडित जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्णकालिक उपदेशक बन गये। उस कार्य में पुलिस की नौकरी जितना वैभव नहीं था, परन्तु मानसिक सन्तोष था कि वह धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

पंडित लेखराम जन्म से ही नहीं, कर्म से भी ब्राह्मण थे। उनमें चिन्तन, भाषण और लेखन की क्षमता थी। इतिहास, ईसाइयत और इस्लाम का उन्होंने गहन अध्ययन किया था और इनमें उन्हें प्रामाणिक विद्वान् माना जाता था। सन् 1893 में उनका विवाह कुमारी लक्ष्मी के साथ हुआ। उनका एक पुत्र भी हुआ, पर उसकी छोटी आयु में ही मृत्यु हो गई।

सन् 1890 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें ऋषि दयानन्द का विशद जीवन चरित्र लिखने का काम सौंपा। इस कार्य के सिलसिले में जानकारी एकत्र करने के लिए उन्हें देश के विभिन्न भागों की लम्बी यात्राएं करनी पड़ीं। इसलिए उनका उपनाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया।

महात्मा मुंशीरामजी द्वारा सराहना

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की भूमिका में महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने लिखा है कि इसमें सन्देह नहीं कि पंडित लेखराम जैसा अन्वेषक स्वभाव का कार्य ही इस आर्य के लिए उपयुक्त था, परन्तु मेरे विचार से यह पुस्तक पाठकों के हाथ में और शीघ्र पहुंचती और घटनाओं की दृष्टि से और पूर्ण होती, यदि इन घटनाओं को एकत्रित करने का कार्य किसी ऐसे अन्वेषक को दिया गया होता, जिस पर उपदेश देने का दायित्व न होता। कौन नहीं जानता कि पंडित लेखराम को वैदिक (आर्य) धर्म की उन्नति का विचार कभी भी एक स्थान पर बैठने नहीं देता था और यदि उन्होंने कहीं सुन लिया कि अमुक स्थान पर मोहम्मदी अथवा ईसाई मतों के उपदेशक विशेष सफलता प्राप्त कर रहे हैं, तो फिर बड़े से बड़े काम और आवश्यक कार्य को छोड़कर भी उस स्थान पर पहुंचना वह अपना कर्तव्य समझा करते थे।

बलिदान

हृष्ट पुष्ट शरीर व पुलिस की नौकरी के अभ्यास के फलस्वरूप पंडित लेखराम जी को थकान और भूख प्यास का कष्ट, कष्ट ही नहीं लगता था। कई वर्ष के प्रयत्न के बाद उन्होंने ऋषि के जीवन चरित्र सम्बन्धी सामग्री एकत्र कर ली। वह उन्होंने उर्दू में लिखी थी। सन् 1897 में जब वह अपने घर में बैठे उसे पुस्तक रूप में लिख रहे थे, तभी एक काले, गठीले हत्यारे ने आकर उन पर छुरे के वार करने शुरू कर दिए। छाती और पेट पर गहरे घाव हुए। अपना काम पूरा करके हत्यारा भाग निकला। उसे पहचाना नहीं जा सका और न कभी पकड़ा ही जा सका। उनके रक्त की बूंदें महर्षि के जीवन की लिखी जा रही पांडुलिपियों पर पड़ी थीं, इसलिए उन्हें 'रक्त साक्षी' नाम दिया गया।

घायल पण्डित जी को तत्काल अस्पताल ले जाया गया। घाव गहरे थे। उन्हें बचाया नहीं जा सका। 6 मार्च 1897 की रात में उनका प्राणान्त हो गया। उस समय महात्मा मुंशीराम जी उनकी मृत्यु शय्या के पास थे। उस दिन उन्हें पता नहीं था कि बीस एक बरस बाद उन्हें भी इसी प्रकार धर्म की वेदी पर अपना बलिदान देना होगा।

आर्य जनों के लिए पण्डित लेखराम का सन्देश था कि 'आर्य समाज का लेखन (तहरीर) और भाषण (तकरीर) का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।

महात्मा हंसराज जी की श्रद्धांजति

पं. लेखराम जी के विषय में महात्मा हंसराज जी ने लिखा है: मैंने धर्मवीर पं. लेखराम जी के दर्शन उस समय किए, जबकि उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया ही था। उनकी आकृति बड़ी थी, परन्तु उनके हृदय में धर्मप्रेम की अग्नि बड़ी प्रचंडता से प्रज्ज्वलित थी। कोई समय नहीं, जब उन्हें आर्यसमाज का ध्यान न हो। कोई भी कष्ट ऐसा नहीं था, जिसे वह आर्य समाज के लिए सहन करने को उद्यत न हों। यदि पांच सौ मील से भी तार आया है कि कोई हिन्दू अपने धर्म का त्याग करने लगा है, तो पण्डित लेखराम वहां पहुंच कर कार्य करने के लिए उद्यत हैं, न मार्ग की कठिनाई का विचार है; न ही इस बात का विचार है कि जहां जाएंगे, वहां भोजन मिलना भी कठिन है; विरोधियों की संख्या सहस्रगुणा है और सहायक सम्भवतः कोई भी न हो; परन्तु फिर भी धर्मवीर अपने यज्ञ पर अटल हैं; अपने मिशन की पूर्ति के लिए उपस्थित है।

परम तपस्वी

उनका जीवन तपस्या का जीवन था। वह कष्ट सहन कर सकते थे तथा करते थे। प्रतिदिन यात्रा में रहना कोई साधारण बात नहीं। उनको इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि उन्हें धनिकों जैसा भोजन प्राप्त होता है अथवा निर्धनों जैसा। जो कुछ प्राप्त हुआ, उसी को खा पीकर, अपितु कई बार भूखा रहकर भी वह उपदेश देते थे, शास्त्रार्थ करते थे। उनकी वेशभूषा भी सादा थी।

प्राणों का निर्मोही निर्भय विप्र

उनमें अद्भुत निर्भीकता थी। सहस्रों विरोधियों के मध्य खड़े होकर भी वे उनके मत का खण्डन करने से न डरते थे। उनको इस बात की कतई चिन्ता न थी कि मेरा जीवन सुरक्षित है अथवा नहीं। मिर्जाइयों के सामना के लिए वह प्रतिक्षण डटे रहते थे।

सर्वस्व समर्पण करने की चाह

आर्य समाज के लिए उनमें अत्यन्त प्रेम था, इस पर फिदा (समर्पित) थे। न अपने घर की कुछ चिन्ता थी तथा न मित्रों का कुछ विचार था। जिस प्रकार जैसूवाट मिशनरी अपने निश्चय के पक्के थे तथा अपने मिशन को सबसे बढ़कर समझते थे, इसी प्रकार यह धर्मवीर भी आर्यसमाज तथा वैदिक प्रचार से बढ़कर किसी उद्देश्य को स्वीकार नहीं करते थे। यही उनके जीवन की लगन थी। इसके लिए वह सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार थे।

घातक इस बात में तो सफल हुआ कि पंडित जी के जीवन को समाप्त कर दें, परन्तु उसने पंडित जी के जीवन को सहस्रों गुणा अधिक उज्ज्वल तथा पवित्र बना दिया तथा आर्यसमाज की जड़ों को भी दृढ़ कर दिया क्योंकि शहीद का रक्त धर्म के भवन का सीमेंट (गारा चूना) होता है।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

महर्षि दयानन्द का दर्शन एवं राष्ट्रीय एकता

– डॉ. किरन श्रीवास्तव

महर्षि दयानन्द का मत था कि राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने के लिए किसी एकांगी उपाय से काम लेना सार्थक नहीं हो सकता है। जब तक समाज की सर्वांगीण उन्नति नहीं होगी तब तक समाज को सुरक्षित व विकसित करना सम्भव नहीं है। क्योंकि समाज की उन्नति व विकास पर ही राष्ट्र की उन्नति व विकास निर्भर है। महर्षि दयानन्द ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया और उसे सफलता के शिखर पर पहुंचाया, क्योंकि धार्मिक भावना तथा सामाजिक भावना के सहचर्य से ही एकता की भावना का निर्माण हो सकता है। महर्षि ने उन्हीं दोनों भावनाओं को विकसित किया। वास्तव में जिस राष्ट्रीयता की हम रक्षा करना चाहते हैं, वह अपने साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास की भूमिका के बिना सम्भव नहीं है।

कवि और साहित्यकार युगदृष्टा होता हैं भविष्य की घटनाओं एवं रेखाओं का वह पूर्ण संकेत करता है। महर्षि दयानन्द ने भी यही किया था। उन्होंने भारतीय मनीषा को नवजीवन, स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान की, तथा वेद-ज्ञान के सार्वभौम प्रसार से सत्य को उजागर कर दिखाया, जिसे उनके पूर्व भाष्यकार नहीं कर सकें थे। महर्षि ने अपने समय से नये युग को जन्म दिया और युग प्रवर्तक बने। वैदिक धर्म का शंखनाद विश्व पर्यन्त निनादित किया, उपनिषदों की दिव्य वाणी मानव मात्र को सुनाई और वैदिक ज्ञान का गंगाजल पिलाकर सुधीजनों की प्यास बुझाई।

आज जिस समय देश में विघटनकारी प्रवृत्तियों से राष्ट्रीय एकता को खतरा उत्पन्न हो रहा है, इस समय हम महर्षि दयानन्द के सन्देश की उपयोगिता को स्वीकार कर सकते हैं। देश की एकता और अखण्डता के विषय में उनका चिन्तन कितना सार्थक रहा है, यह उनकी रचनाओं से स्पष्ट है। अतः उनके साहित्य एवं रचनाओं का अध्ययन-मनन तथा युग के सन्देश को हृदयंगम करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। महर्षि दयानन्द त्याग और वैराग्य के अवतार स्वरूप थे। जिस परम वैराग्य से, जिस गहरी तत्परता से और जिस उच्च भाव से उन्होंने अपने सम्पत्तिशाली पितृगृह का परित्याग किया, वह उनके त्यागभाव का परिचायक, प्रमाण और उनकी विशुद्ध वैराग्य विशेषता का सूचक है।

महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण मानवता के लिए पूरे विश्व में फैली संकीर्णताओं और अन्धविश्वासों से ऊपर उठकर व्यापक सुधार की दिशा दी। उन्होंने अपने विचार का आधार वेद को बनाया। क्योंकि वेद किसी व्यक्ति की मनमानी रचना नहीं सिद्ध हो सकती है और ना ही उसकी शिक्षाओं को किसी काल विशेष या देश विशेष से सम्बद्ध कर सीमित किया जा सकता है। वे सार्वभौम और सार्वकालिक हैं। महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया था कि वेद ही एकमात्र ऐसा बिन्दु है, जहां सभी मत-मतान्तर मिल सकते हैं। वास्तव में वेद भी ईश्वर स्वरूप ही है। क्योंकि वेद ईश्वर से ही प्रकट हुए हैं। ईश्वर प्राप्ति का साधन भिन्न हो सकता है, परन्तु सबके बीज, आधार, प्रकाशक, स्वामी, शासक एक ईश्वर ही है। भले ही रुचि, योग्यता और श्रद्धा विश्वास की विभिन्नता के कारण उनकी उपासना में भेद हो जाए, तत्व में कोई भेद नहीं है। क्योंकि परिणाम में सभी उपासनाएं एक हो जाती हैं। जैसे भूख सबकी एक ही होती है और भोजन करने पर तृप्ति भी सबको एक ही होती है पर भोजन की रुचि सबकी अलग-अलग होने के कारण भोज्य पदार्थ अलग-अलग होते हैं और जैसे मनुष्यों के वेश-भूषा, रहन-सहन, भाषा आदि तो अलग-अलग होते हैं पर रोना और हंसना एक ही होता है और सुख-दुःख सबको समान ही होते हैं, वैसे ही भगवत्प्राप्ति का सुख और अप्राप्ति का दुख सभी को एक समान ही होता है। उपासना के आरम्भ में भाव और योग्यता की प्रधानता होती है और अन्त में तत्व की प्रधानता होती है। भाव और योग्यता तो व्यक्तिगत हैं, पर तत्व व्यक्तिगत नहीं प्रत्युत सर्वगत हैं।

महर्षि दयानन्द ने वेद ज्ञान और वेद स्वाध्याय को परम धर्म के रूप में मान्यता प्रदान किया है। उनका कहना था कि वेदों में जीवन के गहनतम अध्ययन, मनन, चिन्तन तथा व्याहारिक ज्ञान का

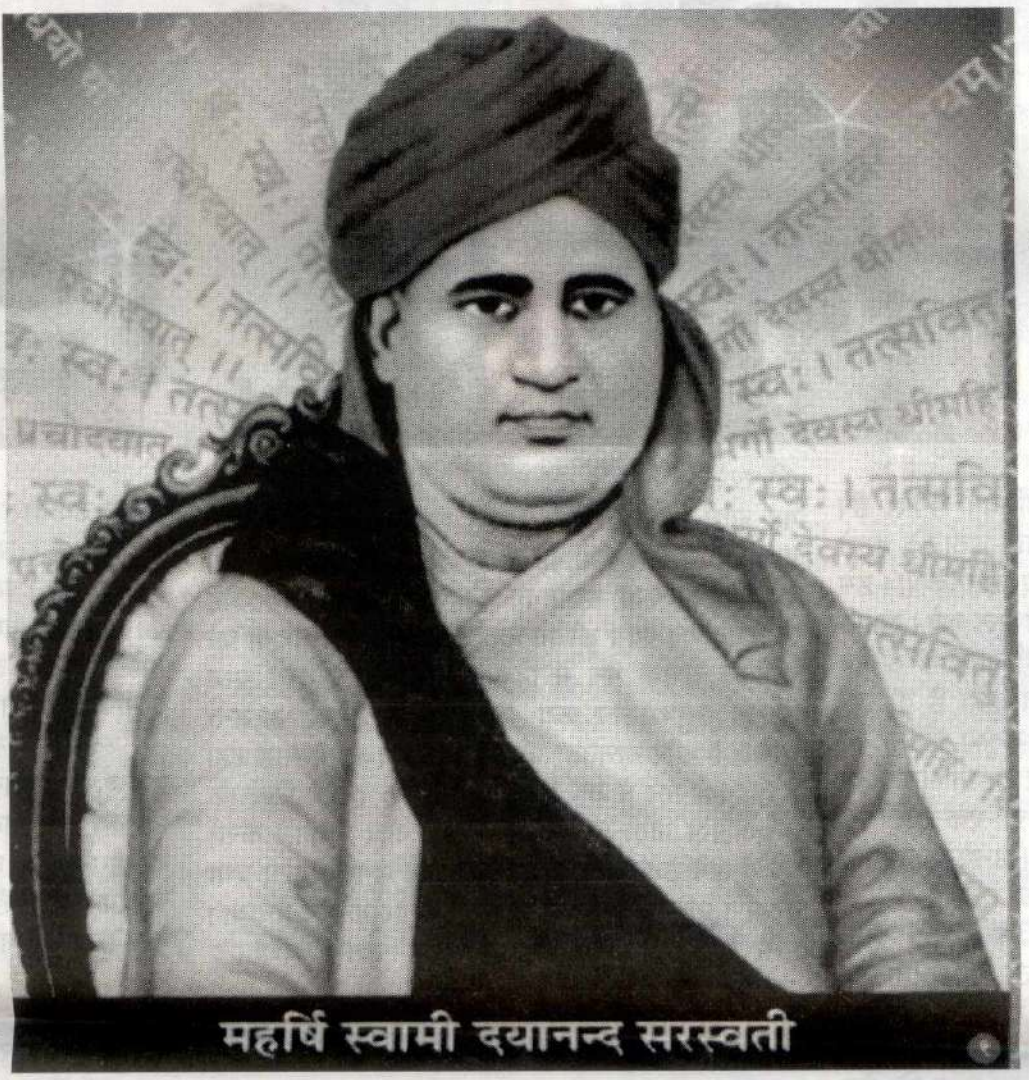

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

पूर्णरूपेण निरूपण है और वेदाध्ययन के पश्चात ही व्यक्ति सुख शांति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महर्षि ने सन् 1857 में आर्य समाज की स्थापना की।

यहां सर्वप्रथम इस पर विचार करना है कि महर्षि का दर्शन क्या है? वास्तव में दर्शन शब्द का अर्थ या निर्वचन इस प्रकार किया जा सकता है- दृष्टिरेव दर्शनम (विशिष्ट) दृष्टि अर्थात विशिष्ट मत ही दर्शन है। दूसरा निर्वचन इस प्रकार है-दृश्यते अनेन इति दर्शनम" अर्थात जिस साधन से परमतत्व को देखा जाए उसे दर्शन कहते हैं। यहां पर महर्षि दयानन्द के दर्शन को एवं राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में उसकी उपादेयता को साथ-साथ निरूपित किया गया है। वास्तव में दर्शन का आधार तर्क है। अतः तर्क द्वारा ही उनके सिद्धान्तों की उपयोगिता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

महर्षि दयानन्द का मत था कि राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने के लिए किसी एकांगी उपाय से काम लेना सार्थक नहीं हो सकता है। जब तक समाज की सर्वांगीण उन्नति नहीं होगी तब तक समाज को सुरक्षित व विकसित करना सम्भव नहीं है। क्योंकि समाज की उन्नति व विकास पर ही राष्ट्र की उन्नति व विकास निर्भर है। महर्षि दयानन्द ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया और उसे सफलता के शिखर पर पहुंचाया, क्योंकि धार्मिक भावना तथा सामाजिक भावना के सहचर्य से ही एकता की भावना का निर्माण हो सकता है। महर्षि ने उन्हीं दोनों भावनाओं को विकसित किया। वास्तव में जिस राष्ट्रीयता की हम रक्षा करना चाहते हैं, वह अपने साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास की भूमिका के बिना सम्भव नहीं है।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि दूरदर्शी है यह बात उनकी कृतियों एवं रचनाओं में स्पष्ट झलकती है। उनके धर्म में समभाव था वे सत्य को स्वीकार करने की प्रेरणा सबको देते थे। उनका सभी प्रकार के लोगों से सम्पर्क था। इसका सबसे सटीक उदाहरण तब मिलता है जब 1857 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी, तो उसमें प्रमुख सहायक मुसलमान थे, जिन्होंने उस समय आर्य समाज के भवन निर्माण में 5100/- रुपये का योगदान दिया था। भले ही कोई उनका शिष्य बन जाए लेकिन उस समय उनके मत एवं धर्म से सभी सहमत थे।

राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए निःस्वार्थ भावना अति आवश्यक है। अध्ययन, तप, दान जैसी उदात्त धार्मिक प्रवृत्तियों का अनुष्ठान भी यदि स्वार्थ के लिए किया जाता है, तो वे आसुरी सम्पदा को ही उत्पन्न करती है। दैवी सम्पदा प्राप्त करने के लिए लोकमंगल की कामना से सत्य का ही सहारा लेना पड़ता है। महर्षि ने लोकमंगल के लिए ही आर्य समाज को चलाया था जिसका उद्देश्य था समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना और समाज को सत्य का आभास कराना। महर्षि का कहना था कि आज धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा है, जबकि धर्म से कल्याण होना चाहिए। वास्तव में धर्म और सत्य पर्याय है। सत्य धर्म का रूप है और धर्म सत्य का, यही वेदों का विषय भी है। उनका कहना है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा उसी के द्वारा मनुष्य को सत्यासत्य का ज्ञान होता है। वे लिखते हैं :-

"जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त, ऋक् संहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्य को सत्यासत्य का ज्ञान होता है उसे वेद कहते हैं।"

उन्होंने वेदों की उत्पत्ति के बारे में "सत्यार्थ प्रकाश" के सप्तम् समुल्लास पृ. 144 पर लिखा है- "प्रथम सृष्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।"

इसके आगे वे लिखते हैं :-

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मसनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्धयर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्।।

"जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराए उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋक्, यजुर, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।"

अतः ईश्वर द्वारा प्रकाशित होने के कारण वेद सत्य हैं। वेद की शिक्षा का पुनः प्रचार होना अति आवश्यक है, ऐसा मानकर महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की और वेद को आधार बनाकर उसी के अनुसार जीवन यापन की शिक्षा दी।

आर्यसमाज रायबरेली का 125वां वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य समाज रायबरेली का 125वाँ वार्षिकोत्सव 22 से 24 फरवरी, 2020 तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में विशेष रूप से आमंत्रित थे। वैदिक विद्वान पं. दीनानाथ शास्त्री जी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ जी विशेष रूप से कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी तथा भाव प्रधान उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सारे देश में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस तथा बोध दिवस हम प्रतिवर्ष मनाते हैं। लेकिन हमारे मन में यह प्रश्न कभी नहीं उठा कि हमने अपने जीवन को उन्नत करने के लिए क्या किया। हम कहीं जीवन की सार्थकता को तो नहीं भूल गये। स्वामी जी ने कहा कि यह मानव जीवन पूर्व जन्म के अनेक शुभकर्मों के परिणामस्वरूप हमें प्राप्त हुआ है तो हमें इस प्रकार के कार्य करने चाहिए जो मनुष्य जीवन को सार्थक बना सकें। स्वामी जी ने उन महान पुरुषों के जीवन की घटनाओं का विवरण दिया जो एक छोटी सी घटना के कारण महान पुरुष बन गये। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन में प्रतिदिन कुछ न कुछ घटनाएं घटित होती रहती हैं लेकिन हम उस पर ध्यान नहीं देते। लेकिन जो महान होते हैं वे उस छोटी सी घटना को गहराई तक देखकर अपने जीवन को बदल देते हैं और संसार के मार्ग दर्शक बन जाते हैं। स्वामी जी ने प्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन के सम्बन्ध में बताते हुए कहा कि पेड़ से एक सेब नीचे गिरा और न्यूटन के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह सेब नीचे ही क्यों गिरता है ऊपर क्यों नहीं चला गया। इस साधारण सी घटना से प्रेरित होकर उन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम बना दिया और संसार में अमर हो गये। एक महान दार्शनिक अब्राहम लिंकन ने जब जार्जिया स्टेट के मण्डी के अन्दर मनुष्यों की खरीद–फरोख्त की मण्डी लगते हुए देखी जिसमें वह स्वयं अपने परिवार सहित शामिल था और उसने देखा कि यहाँ मनुष्यों की बोली लग रही है जिसमें पिता को कोई ले गया, माता को कोई ले गया, पुत्र को कोई ले गया और स्वयं को भी कोई ले गया। इस घटना को देखकर उसके मन में विचार उठा कि ये दास प्रथा जिसमें मनुष्यों का क्रय–विक्रय होता है यह अत्यन्त घृणित है और मानवता की गिरावट की सीमा तोड़ रहा है। उनके मन में यह विचार आया कि इसके खिलाफ हमें अलख जगानी है। बाद में इस क्षेत्र में कार्य करते हुए वे अमेरिका के राष्ट्रपति बने और उन्होंने दास प्रथा पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए कठोर कानून बनाया। इसी प्रकार के एक महान पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती जी थे जिन्होंने अपने बचपन में ही एक ऐसी क्रांति को जन्म दिया जिसमें दो बाते थीं कि यह हो सकता है या यह नहीं हो सकता। शिव पिण्डी पर चढ़े चूहे को मल करते हुए तथा प्रसाद खाते हुए देखकर मूलशंकर के मन में यह विचार आया कि यह परमेश्वर नहीं हो सकते। जो चूहे से भी अपनी रक्षा न कर सके। जब समूचा भारत उस शिवलिंग में परमेश्वर को मान रहा था, ऐसे में मूल शंकर की यह घोषणा किसी क्रांति से कम नहीं थी। अभी यह मात्र अंकुरित ही हुई थी तथा इसका पुष्पित एवं पल्लवित रूप लोगों ने कुम्भ में पाखण्ड–खण्डिनी पताका के रूप में देखा। महर्षि को यह दिव्य दृष्टि तो ऋषि बनने के बाद ही मिली होगी किन्तु क्रांति के बीज उनके मन में जन्म से ही विद्यमान थे। यह क्रांति महर्षि दयानन्द जी ने अकेले की। वेद उनका आधार था परमेश्वर सहायक। केवल इन दोनों के बल पर ही महर्षि दयानन्द जी ने सभी को परास्त करके दिग्विजय प्राप्त की थी। पण्डे–पुजारियों, साधु–सन्तों के विरुद्ध स्वामी दयानन्द जी ने यों ही शंख नहीं फूंख दिया था अपितु सबके रहस्यों को जानकर ही उनका पर्दाफाश किया था। धर्म के नाम पर चली आ रही विभिन्न कुरीतियों तथा उनके ठेकेदारों, प्रचारकों के विरुद्ध न केवल घोषणाएं अपितु युद्ध स्तर पर कार्य करना स्वामी दयानन्द जी का ही कार्य था। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी का समस्त जीवन उनकी स्थापनाएं उनके कार्यों पर दृष्टिपात करें तो यही पायेंगे कि स्वामी दयानन्द जी जन्मजात क्रांतिकारी थे।

स्वामी जी ने आर्यजनों का आह्‌वान किया कि आज इस शुभ अवसर पर हम सबको यह चिन्तन करना है कि क्या हम सब महर्षि के बताये रास्ते पर चल रहे हैं या हमने इस धरा पर जन्म लेकर अपने जीवन को सार्थक किया है। हम सबका यह कर्त्तव्य है कि अपने पथ प्रदर्शक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बताये रास्ते पर चलें तथा उनके मन्तव्यों, सिद्धान्तों तथा कार्यों के अनुरूप अपने आपको ढालकर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में बढ़–चढ़कर भाग लें।

इस उत्सव में आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती क्रांति चौधरी, मंत्री श्री राजीव वर्मा, कोषाध्यक्ष श्री हरिशंकर शुक्ला, संरक्षक श्री धर्मेन्द्र कुमार वर्मा, श्री शरद चौधरी एडवोकेट, श्री प्रेममुनि वानप्रस्थ, श्री मेडीलाल पुरोहित आदि ने विशेष प्रयत्न करके कार्यक्रम को सफल बनाया।

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्वावधान में
दिनांक 18 फरवरी, 2020 से 21 फरवरी, 2020 तक श्रद्धानन्द अनाथालय सदर बाजार, करनाल में
महर्षि दयानन्द जी के जन्म एवं बोधोत्सव का किया गया भव्य आयोजन
इस उपलक्ष्य में 15 फरवरी, 2020 को नगर के विभिन्न भागों में वाहन रैली तथा 18 फरवरी, 2020 को विशाल शोभा यात्रा द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्वावधान में दिनांक 18 फरवरी, 2020 से 21 फरवरी, 2020 तक श्रद्धानन्द अनाथालय सदर बाजार, करनाल में महर्षि दयानन्द जी के जन्म एवं बोधोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र आचार्य नोएडा थे, उनके अतिरिक्त डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार व प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री उपेन्द्र आर्य चण्डीगढ़ भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

उत्सव के इस अवसर पर महर्षि दयानन्द जी के जन्मदिवस एवं बोधोत्सव के कार्यक्रमों के अतिरिक्त भ्रांति निवारण सम्मेलन, राष्ट्र भक्ति सम्मेलन, मातृ शक्ति सम्मेलन सहित अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इस उपलक्ष्य में 15 फरवरी को नगर के विभिन्न स्थानों से होती हुई एक वाहन रैली का आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सैकड़ों व्यक्ति मोटरसाईकिलों, स्कूटरों तथा कारों द्वारा सम्मिलित हुए। 18 फरवरी को नगर के विभिन्न भागों से होती हुई विशाल शोभायात्रा के द्वारा प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम अत्यन्त भव्यता के साथ सम्पन्न किया गया। मुख्य कार्यक्रम 18 फरवरी, 2020 को श्री शांति प्रकाश आर्य द्वारा ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ।

21 फरवरी, 2020 को ऋषि बोधोत्सव में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए और उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला उनके अतिरिक्त डॉ. जयेन्द्र एवं आर्य समाज के संरक्षक श्री लाजपत राय चौधरी ने भी महर्षि के जीवन से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जब भारत की शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति पर काले बादल मंडरा रहे थे तब भारतीय क्षितिज पर एक ऐसा दैदीप्यमान सूर्य स्वामी दयानन्द जी के रूप में उदित हुआ जिसने शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में फैले प्रदूषण को धोकर अपने प्रकाश से निर्मल बना दिया। उन्होंने 'मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद' की पुनीत भूमि पर रचे-बसे गुरुकुल पद्धति के शिक्षा आश्रमों को चिन्हित कर वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। स्वामी जी ने कहा कि वे जानते थे कि वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इस युग में संकुचित दृष्टिकोण रूढ़िवादिता और अन्धविश्वासों के मायाजालों में फंसा रहना अनर्थकारी होगा। इसीलिए उन्होंने लोगों को वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टि दी। भूत, प्रेत, गण्डे ताबीज, ओझाओं के झाड़-फूंक आदि के कुचक्रों में न जाने कितने स्त्री-पुरुष दिग्भ्रमित हो रहे थे। कर्मकांडी और पाखण्डी पण्डे-पुजारियों के चंगुल में लोग फंसे हुए थे। इन सामाजिक विसंगतियों और पाखण्डों को दूर कर महर्षि ने तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि देकर लोगों को ठग और स्वार्थी लोगों से बचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। स्वामी जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ घटनाएं निरन्तर होती रहती हैं, लेकिन उन घटनाओं से एक विशेष विचार को प्रतिपादित करना महापुरुषों का ही लक्षण होता है। स्वामी जी ने छोटी-छोटी घटनाओं से प्रेरित होकर महान पुरुष बनने वाले विभिन्न व्यक्तियों की घटनाओं का विवरण देते हुए कहा कि ऐसे ही एक महान पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भी थे। जिन्होंने शिवलिंग पर उछल-कूद करते चूहों को देखकर उनके मन में सच्चे शिव की खोज का एक क्रांतिकारी विचार प्रस्फुटित हुआ और वे सच्चे शिव की खोज में निकले और उन्होंने समाज में क्रांति पैदा कर दी। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा मानव मात्र की विचारधारा है और इसका प्रचार-प्रसार करने के लिए हम सबको कटिबद्ध होना पड़ेगा।

समारोह में डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार व प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री उपेन्द्र आर्य चण्डीगढ़ ने अपने व्याख्यान तथा भजनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

इस आयोजन को सफल बनाने में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान डॉ. आनन्द कुमार, मंत्री श्री स्वतन्त्र कुकरेजा, कोषाध्यक्ष श्री सतीश चन्द्र गुप्ता, श्रीमती शकुन्तला मुखीजा प्रधाना, श्रीमती नवकिरण भाटिया कोषाध्यक्ष व श्रीमती संतोष आर्या मंत्री आदि के अतिरिक्त आर्य अनाथालय के प्रधान श्री बलदेवराज आर्य, श्री गोपीचन्द शर्मा, सभा के संरक्षक श्री सत्येन्द्र मोहन कुमार, श्रीमती ममता पाण्डेय प्रिंसिपल व श्रीमती मनीषा पाण्डेय, श्री कर्णवीर आर्य व श्री भोपाल सिंह आर्य आदि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम अत्यन्त भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/- में

एक वेद सैट मात्र 3100/- रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002 • दूरभाष :- 011-23274771

रक्तवर्धक एवं पौष्टिक – अनार

अनार को दाड़िम भी कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम प्यूनिका ग्रेनेटम है। अनार गोलाकार, लगभग दो इंच व्यास का फल होता है जिसका छिलका कठोर व मोटा होता है तथा भीतरी भाग पर्तों के द्वारा अनेक खण्डों में विभाजित रहता है। जिनमें कई कोणों वाले (नोंकदार) सफेद, लाल या गुलाबी रंग के अनगिनत दाने होते हैं। इनके भीतर बीज होते हैं। अनार के फल को नहीं बल्कि दानों के (बीजों के ऊपर के) रसीले भाग को खाया जाता है या इनका रस निकालकर पिया जाता है। सूखने पर इसका दाना अनारदाना कहलाता है उसमें ऊपर के रसीले भाग के पदार्थ की सुगन्ध होती है। फल जुलाई से सितम्बर माह तक आता है। सम्पूर्ण भारत में इसकी पैदावार होती है परन्तु सर्वाधिक पैदावार महाराष्ट्र में पूना के आस–पास तथा गुजरात में ढोलका के आस–पास होती है। हिमाचल प्रदेश का बेदाना (बीज रहित) तथा कंधारी अनार उत्तम माना जाता है।

रासायनिक संगठन :– अनार के दाने में 78 प्रतिशत जल, 1.6 प्रतिशत प्रोटीन, 1 प्रतिशत वसा, 5.1 प्रतिशत तन्तु, 14.5 प्रतिशत अन्य कार्बोहाइड्रेट तथा 0.7 प्रतिशत खनिज पदार्थ होता है। इसके 100 ग्राम भार में 10 मिग्रा फॉस्फोरस, 0.3 प्रतिशत मिग्रा ताम्र, 12 मिग्रा, गन्धक, 2 मिग्रा क्लोरीन, 0.06 मिग्रा थायमीन हाइड्रोक्लाराइड (विटामिन 'बी1'), 0.10 मिग्रा राइबोफ्लेविन (विटामिन 'बी2'), 0.30 मिग्रा, निकोटिनिक एसिड और 14 मिग्रा एस्कोर्बिक एसिड या विटामिन 'सी' होता है। इनके अतिरिक्त 14 मिग्रा, आक्जेलिक एसिड होता है। अनार के रस में अम्लता 0.45 से 3.47 ग्राम प्रति 100 मिली. होती है। रस में कुछ टैनिन भी होता है।

फल के ताजे छिलके में 4.5 प्रतिशत राल, 1.8 प्रतिशत मेनिटोल, 2.7 प्रतिशत शुगर, 3.2 प्रतिशत गोंद, 1 प्रतिशत इन्युलिन, 0.6 प्रतिशत म्युसिलेज, 4 प्रतिशत कैल्शियम ऑक्जेलेट और 2 से 4 प्रतिशत तक पैक्टिन तथा 28 प्रतिशत गैलोटैनिक एसिड होता है। छिलके या छाल में पोलिटियरिन और आइसो पेलिटियरिन आदि क्षाराभ होते हैं। जिनकी फीताकृमि पर विशेष क्रिया होती है।

चिकित्सीय उपयोग :– अनार मानसिक एवं शारीरिक शक्ति प्रदान करने वाला होता है। यह हृदय को बलवान बनाता है। यह भूख बढ़ाने वाला, भोजन में रुचि उत्पन्न करने वाला तथा प्यास बुझाने वाला होता है। यह रक्तशोधक शीतल ज्वरघ्न, कपनिःसारक व मूलत्र है। यह वीर्यवर्द्धक और शुक्राणुओं को शक्तिशाली बनाता है। अनार रक्तस्तम्भ (रक्तस्राव को रोकने वाला) होता है। अनार के छिलके (छाल) दाने एवं रस से निम्न रोगों की चिकित्सा की जाती है।

दाग एवं चेहरे की झाईयाँ :– अनार के छिलके सौन्दर्य वर्द्धक होते हैं। इन्हें सुखाकर तथा पीसकर बारीक पाउडर बनाकर गुलाब जल के साथ मिलाकर उबटन की तरह लगाने से शरीर के दाग एवं चेहरे की झाईयाँ नष्ट हो जाती हैं।

कृमि रोग :– अनार की छाल का विशेष रूप से फीताकृमि पर प्रभाव होता है। फीताकृमि के मामले में 100 ग्राम अनार की ताजी छाल को दो किलोग्राम पानी में उबालें, आधा शेष रहने पर छानकर रोगी को खाली पेट 100–100 ग्राम हर आधे घण्टे पर चार बार पिलायें तथा कुछ देर बाद 25 मिली. एरण्ड तेल (कैस्टर आयल) पिलायें। ऐसा करने से कृमि मर कर बाहर निकल जाते हैं।

खाँसी :– अनार का छिलका 80 ग्राम तथा सेंधा नमक 10 ग्राम दोनों को खूब महीन पीसकर कपड़छन कर लें तथा इस चूर्ण में पानी मिला मटर के बराबर गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें। प्रतिदिन सुबह–दोपहर–शाम दिन में तीन बार एक–एक गोली मुंह में डालकर चूसने से कुछ ही दिनों खांसी

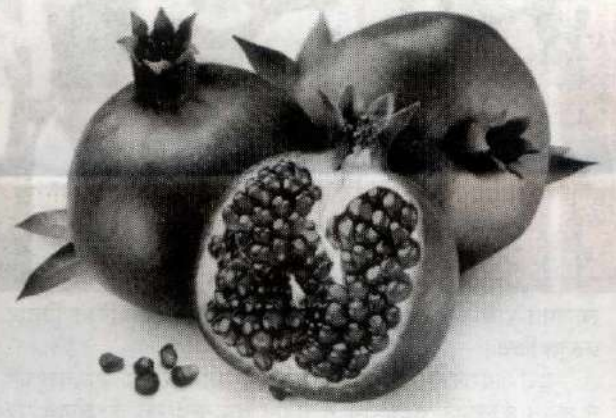

दूर हो जाती है। बच्चों को अनार का छिलका चूसाने से खांसी में आराम पहुँचता है।

काली खांसी :– 6 ग्राम अनार का छिलका थोड़े से दूध में उबालकर यह दूध बच्चे को पिलाने से काली खांसी में आराम मिलता है।

दस्त, पेचिश :– 15 ग्राम अनार के सूखे छिलके और दो लौंग, दोनों को पीसकर एक गिलास पानी में 10 मिनट तक उबालें, फिर छानकर आधा–आधा कप रोज सुबह–दोपहर–शाम दिन में तीन बार पीने से दस्तों में और पेचिश में बहुत लाभ होता है। दस्तों में अनार का रस पीना लाभदायक होता है।

अत्यधिक मासिक स्राव होना :– स्त्री में अत्यधिक मासिक स्राव होने पर अनार के सूखे छिलकों को पीसकर कपड़े में छान लें। स्त्री के द्वारा दिन में दो बार ठण्डे पानी से छने हुए चूर्ण का एक–एक चम्मच भर लेने से मासिक स्राव बन्द हो जाता है।

खूनी बवासीर :– 8 ग्राम अनार के छिलकों के चूर्ण की सुबह–शाम ताजे पानी के साथ फंकी लेने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

स्वप्नदोष :– अनार के छिलकों का चूर्ण पाचं–पांच ग्राम सुबह–शाम पानी से लेने पर स्वप्नदोष में लाभ होता है।

तृष्णा :– अधिक प्यास लगने पर अनार खाने या अनार का रस पीने से प्यास बुझ जाती है।

अरुचि :– 75 ग्राम अनारदाना लेकर उसके साथ आधा चम्मच काली मिर्च, एक चम्मच भुना हुआ जीरा, चने की दाल के बराबर भुनी हुई हींग, स्वादानुसार सेंधा नमक मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लें। इसके खाने से अरुचि दूर हो जाती है और मन प्रसन्न हो जाता है।

जी मिचलाना, उल्टी होना :– जी मिचलाने एवं उल्टी होने में अनार का रस पीने से लाभ होता है।

पेट का दर्द :– अनार के दानों में थोड़ा सा सेंधा नमक और पिसी हुई काली मिर्च छिड़क कर चूसने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

दुर्बलता :– अनार खाने अथवा अनार का रस पीने से शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता दूर हो जाती है।

हृदय दौर्बल्य :– अनार का रस पीने से हृदय को शक्ति मिलती है और घबराहट दूर हो जाती है।

रक्ताल्पता या एनीमिया :– अनार का सेवन करने से इसमें लाभ होता है।

कामला या पीलिया :– 50 ग्राम अनार के दानों का रस लेकर उसे रात भर के लिए लोहे के बर्तन में रख दें और सुबह ही उसमें थोड़ी सी मिश्री मिलाकर पियें तो कुछ ही दिनों में पीलिया रोग दूर हो जाता है।

मूत्रकृच्छ :– पेशाब कठिनाई से होने में अनार का सेवन किया जाता है तो पेशाब बिना कष्ट के खुलकर हो जाता है।

ज्वर :– ज्वरों में अनार को पथ्य के रूप में दिया जाता है। इससे ज्वर तथा उसके उपद्रव शांत होते हैं और रोगी के बल की वृद्धि होती है।

नक्सीर छूटना :– नथुनों में अनार का रस डालने से नाक से रक्तस्राव होना बन्द हो जाता है। शरीर के अन्य भाग से खून निकल रहा हो तो उसे रोकने में भी अनार का अच्छा प्रभाव है।

शुक्राणु दौर्बल्य :– अनार का सेवन करने से शुक्राणु शक्तिशाली बनते हैं और पुरुष में लैंगिक संसर्ग के लिए इच्छा जागृत होती है।

विशिष्ट योग :– आयुर्वेद में अनार से दाड़िमाष्टक, दाड़िमादि चूर्ण, दाड़िमाद्य घृत तथा दाड़िमद्य तेल आदि विशिष्ट योग तैयार किये जाते हैं।

– हिन्दुस्तान से साभार

आर्यवीरदल जोधपुर के तत्वावधान में
आर्य समाज मंडोर, राजस्थान में महर्षि दयानन्द बोध दिवस मनाया गया

आर्यवीरदल जोधपुर के तत्वावधान में आर्य समाज मंडोर, राजस्थान में महर्षि दयानन्द बोध दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्य वीर दल जोधपुर के अध्यक्ष हरिसिंह जी आर्य ने बताया की कार्यक्रम का आरम्भ यज्ञ के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रामसिंह जी आर्य उपमंत्री– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने आर्यजनों को संबोधित करते हुये कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महाभारत के बाद वेदों और वैदिक संस्कृति के उत्थान, और आर्यवर्त की पुनः स्थापना का बीड़ा उठाया था। वो मात्र एक महर्षि दयानंद सरस्वती थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन परोपकार में समर्पित कर दिया। नारी उत्थान, नारी शिक्षा, अछूतोद्धार, गुरुकुल शिक्षा, समान शिक्षा, वेद पढ़ने व सबको यज्ञ करने का समान अधिकार देने की वकालत की तथा जाति व्यवस्था के विरुद्ध तथा वर्ण व्यवस्था पर जोर तथा गुलामी और अज्ञान, अन्याय, अभाव के खिलाफ नौजावनो को प्रेरित कर आजादी और स्वदेशी की नींव रखी। आज समाज पाखण्ड की बलि चढ़ रहा है तो आर्यों का दायित्व और ज्यादा बढ़ जाता है कि पाखण्ड तथा अज्ञानता को नष्ट कर वेदानुसार श्रीराम, श्रीकृष्ण के आर्यवर्त की नींव को मजबूत

करे।

इस अवसर पर श्री भंवरलाल जी आर्य अधिष्ठाता संचालक राजस्थान ने भी विचार व्यक्त किया तथा श्री नारायण सिंह जी आर्य एवं श्री वीरूमल जी आर्य ने ऋषि दयानंद की प्रेरक जीवनी पर भजन व आर्य वीरांगना पूजा आर्या ने आर्य वीरो के लिए ओजस्वी कोरस की सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन श्री विनोद जी गहलोत ने किया।

इस अवसर पर सर्वश्री मदनगोपाल जी आर्य, उम्मेद सिंह आर्य, चांदमल जी आर्य, डॉ लक्ष्मण सिंह जी, गजे सिंह जी भाटी, गनपत सिंह जी, जितेंद्र सिंह जी, पुनाराम जी, किशोर सिंह जी, मानवेंद्र सिंह जी, महेश जी आर्य, अशोक जी आर्य, पृथ्वी सिंह जी भाटी, पूनम सिंह जी शेखावत, नरेंद्र सिंह जी, आदि आर्य समाज तथा आर्य वीर दल जोधपुर के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

विधायिका मनीषा पंवार का किया गया जोरदार स्वागत

महर्षि दयानन्द स्मृति दौड़ प्रतियोगिता में धावकों ने दिखाया दमखम

आर्य वीरदल व जिला एथलेटिक संघ के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जयंती सप्ताह के तहत रविवार को आयोजित तृतीय महर्षि दयानन्द स्मृति दौड़ प्रतियोगिता में धावको ने अपना दमखम दिखाया। जिला एथलेटिक संघ के सचिव कन्हैयालाल मिश्रा व अध्यक्ष भरत मेघवाल ने बताया कि चामुण्डा माता मंदिर के सामने से सुन्देला तालाब की पाल पर पहली बार आयोजित एक किलोमीटर की दौड़ प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने उत्साह से भाग लिया। दौड़ प्रतियोगिता का परिणाम बालक वर्ग दस वर्ष आयुवर्ग में सुमित कुमार वीएस महावीर, योगेश सोलंकी शेम्फर्ड, हर्षवर्धन वीएस महावीर, बारह वर्ष आयु वर्ग में आयुष गुप्ता शेम्फर्ड, विहान राज सक्सेना के वीएस, आकाश चौधरी जालोर नोबल एकेडमी, चौहद वर्ष आयु वर्ग में संजय कुमार वीएस महावीर, महिपाल सिंह इम्मानुएल, ध्रुव परमार आर्य वीरदल, सोलह वर्ष आयु वर्ग में किशोर राजकीय माध्यमिक विद्यालय राजेन्द्र नगर, विजयपाल सिंह आर्य वीरदल, रोहित सागर वीएस महावीर, सीनियर वर्ग में जसवंत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जालोर, प्रवीण कुमार सांचोर, किशोर कुमार राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जालोर ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार बालिकाओं के दस वर्ष आयु वर्ग में जैनब खान वीएस महावीर, भाविका वीएस महावीर, प्रांजल आर्य वीरदल, बारह वर्ष आयु वर्ग में इंशिता चौधरी शेम्फर्ड, हिमानी वैषणव इम्मानुएल, अर्पिता राजपुरोहित शेम्फर्ड, चौदह वर्ष आयु वर्ग में कुसुम सुथार वीएस महावीर, विधी सोनी वीएस महावीर, द्वीप सोलंकी शेम्फर्ड, सोलह वर्ष आयु वर्ग में पूजा परमार, साक्षी कड़वासरा, नेहा सुथार तीनों वीएस महावीर, सीनियर बालिका वर्ग में निका कंवर जालोर पब्लिक स्कूल, सुनीता चौधरी सेंट राजभर, अंकिता आर्य वीरदल ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विजेता धावकों को कान्हड़देव कृषि उपज मंडी के सचिव श्री कमल सोनी, आर्य वीरदल के संरक्षक श्री दलपत सिंह आर्य, अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार, महामंत्री श्री शिवदत्त आर्य, भामाशाह पारस सुन्देशा धानसा, श्रीमती शारदा मनोहर सिंह गहलोत, डूंगाराम सुधार, राष्ट्रीय मुक्केबाज श्री वरुण शर्मा व श्री विनोद चौधरी ने मेडल प्रमाण पत्र व गिफ्ट हेम्पर देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर जोधपुर शहर से विधायिका तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य जी की सुपुत्री श्रीमती मनीषा पंवार जी के पहुंचने पर आर्य नेताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। इस दौरान अम्बिका प्रसाद तिवारी, आर्य वीरदल के संगठन मंत्री श्री कांतिलाल आर्य, श्री छगन नाथ कुपाराम आर्य, जगदीश सोलंकी, श्री प्रीतम सिंह राठौड़, मोहम्मद तौसीफ कुरेशी, प्रवीण आर्य, अरूण आर्य, अवनीश सक्सेना, अरविन्द सिंह, राज पुरोहित, विपिन गुप्ता सहित बड़ी संख्या में खेल प्रेमी व धावक मौजदू थे।

आर्य समाज के छठे नियम की व्याख्या

'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

व्याख्या :– इस समाज का मुख्य उद्देश्य है इस जगत जिसमें हम निवास करते हैं, का उपकार करना है।

संसार में रहकर हमें सांसारिक तो बने रहना है किन्तु हम अध्यात्म की गरिमा को सुरक्षित रखते हुए अपने जीवन की गाड़ी निर्वाध चलाएं। यही अपेक्षित है। उपकार कई प्रकार से किया जा सकता है। जो जीवन से हार चुके हैं उन्हें हम जीना सिखाएं। वह व्यक्ति जो हमारी संगति में होगा तो वह अविद्या और अपसंस्कृति को मिटाने वाला हमारी उर्वर सोच होगी। यही सोच वास्तविक रूप से जीना सिखाती है। हम ऐसे भीरू व्यक्तियों को शारीरिक रूप से सबल बना सकते हैं। शारीरिक क्षमता तभी हो सकेगी जब वह शरीर निरोग हो। स्वस्थ और निरोगी शरीर में आत्मा का निवास बहुत उत्तम दर्शनीय होगा। आत्मा सबल होती हुई चली जायेगी। महात्मा कौन होता है वही तो होता है जो उत्तम आत्मिक प्रतिभा जीवन में धारण किये हुए होंगे। आत्मिक सौंदर्य से मंडित उत्तम मनुष्य अपने जीवन व्यवहार की छाप से दूसरों को अच्छा मार्ग मिलेगा। व्यक्ति नित–नित संन्ध्या हवन करेगा और अपना जीवन यज्ञीय बना लेगा। ये इस समाज की मर्यादा के सोपान हैं। अच्छी आदतें प्रकृति की देन हैं और प्रकृति को सदैव मुक्त और शुद्ध–बुद्ध रखेगा। ऐसा व्यक्ति मर्यादित होगा। समाज में उसका मान–सम्मान होगा यानि अमुक व्यक्ति का सामाजिक जीवन लेन–देन व्यवहार के अन्तर्गत उत्तम सामाजिकता का आचरणवान होगा।

देश समाज में हर व्यक्ति का योगदान होना चाहिए और समाज का भी दायित्व है कि वह समाज से लाभान्वित हो।

वस्तुतः उन्नयन के लिए राज कर्मचारी भी प्रशासकों से मर्यादित हो नियम भंग करने में उच्छृंखलता हो तो दंड विधान है।

सामज में फैली कुरीतियों के विनाश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना आवश्यक है। अध्यात्म और विज्ञान की सम्पूर्णता उत्पन्न करते हैं।

हर व्यक्ति की चारित्रिक श्रेष्ठता ही जीवन को स्पन्दित करती है। व्यक्तियों के समूह को शिक्षा और विद्या सीखनी चाहिए तभी तो ऊँची संस्कृति बनती ह। संस्कृति के निखार से सभ्यता का श्रेष्ठ सृजन होता है।

शिक्षालयों में छात्र–छात्राओं को वीर्य की महत्ता बतानी चाहिए। यह सूत्र – 'मरणं बिन्दूपातेन' अर्थात् वीर्य पतन का नाम मृत्यु है। 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युपाध्नते।' गुरुकुलों में आचार्यों द्वारा विद्यार्थियों को उनकी प्रथम प्रविष्टि पर सन्देश दिया जाता है। 'मनसा वाचा कर्मणा' का छात्र–छात्राओं को संकल्प कराया जाता है। यह संस्कारों की संस्कृति उल्लास जगाती है। उन्हीं संस्कारों को रचा–पचा कर जीवन में अनेक जीवन में अनेक विद्याओं के अभियान प्रारम्भ होते हैं। यही वैदिक संस्कृति है जो वेदों में प्रस्यूत है।

त्रिर्वतियातं त्रिरअनुप्रते जनेत्रिः सुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम्।

त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः प्रक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम्।। ऋ. मं. । सू. 34

पदार्थ – हे (अश्विना) विद्या देने वा ग्रहण करने वाले विद्वान् मनुष्यों! (युवम्) तुम दोनों (अस्मे) हम लोगों के (वर्तिः) (त्रिः) तीन बार (यातम्) प्राप्त हुआ करो तथा (सुप्राव्ये) अच्दे प्रकार प्रवेश करने योग्य (अनुव्रते) जिसके अनुकूल सत्याचरण व्रत है उस (जने) बुद्धि के उत्पादन करने वाले मनुष्य के निमित्त (त्रि) तीन बार (यातम्) प्राप्त कीजिए (अस्मे) हम लोगों को (शिक्षतम्) शिक्षा और (नान्द्यम्) समृद्धि होने योग्य शिल्प ज्ञान को (त्रिः) तीन बार (वहतम्) प्राप्त करो और (अक्षरेव) जैसे नदी ताल समुद्र और सकास जल से प्राप्त होते हैं, वैसे हम लोगों को (वृक्षः) विद्या सम्पर्क को (त्रिः) तीन बार (पिन्वतम्) प्राप्त करो।

भावार्थ :– शिल्प विद्या के जानने वाले मनुष्यों को योग्य है कि इच्छा करने वाले अनुकूल बुद्धिमान को पदार्थ विद्या पढ़ा और उत्तम–उत्तम शिक्षा बार–बार देकर कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ करें और उनको भी चाहिए कि इस विद्या को सम्पादित करके यथावत् चतुराई और पुरुषार्थ से सुखों के उपकारों को ग्रहण करें।

आर्य समाज एक सर्वश्रेष्ठ मानक प्राप्त संगठन है जिसका कोई जवाब नहीं। यज्ञ में सभी सुख विद्यमान है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की उत्कृष्ट अवधारणा से यदि हम अपने आपको आर्य बना लें तो हम फिर अन्य सज्जनों को भी आहूत कर सकते हैं। आर्य समाज के दसों नियमों में हीरे हार जैसी उत्कृष्टता या चमक लिये हम सबके ह्रदयों को जीत लेंगे। यह निश्चिय है। वर्तमान दौर में हॉफ रहे, अधोगति में पड़े अवैदिक तंत्रों में जकड़े हुए ढोंगी बाबाओं से निजात पायें। हमारा वेद प्रचार इतना समर्थ हो कि हम दूसरों को अपने आर्य समाज के दस नियमों को उनके ह्रदयों में अनुकरणीय सत्य उतार कर आश्वस्त करें। संसार को सही मार्ग दिखाते हुए हम बेहतरीन उपकार कर सकते हैं। आओ इस पवित्र हीरे की परख कराते हुए सबका शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उनयन का पथ अग्रसारित करें।

"शरीर आत्मा मन प्रबुद्ध संकल्पित हों,
संगच्छध्वम् संवदध्वम् को विस्तारें।
मनुज वही जो अच्छा–सच्चा स्वस्थ विचारे
जीवन में सुखन्ती कैसे चलें विचारें।
उपकारित हो सारा जग जिसमें रहते हम,
साफ–स्वच्छता से शोभित पूरित आशाएँ।
रहें प्रकाशित वेद मंत्र के विविध ज्ञान से,
चमका दें हम आलोकि हों सभी दिशाएँ।
सभी इन्द्रियाँ निर्दोषित यशवन्ती होवें,
सदा स्वच्छता के हामी हम पृथुलवान हों।
इतना अच्छा सरल ज्ञान–विज्ञान वरण कर,
सारे जीवन में जीवनभर कृतुभवान् हों।

उप संहार करते हुए हम कह सकते हैं कि सकारात्मक दृष्टिकोण तन–मन–आत्मा के सच्चे स्वरूप को सजाता रहेगा और जीवन में निखार आता रहेगा। इसके लिए योग के अन्तर्गत मनुष्य होने का पूर्ण विकास और आनन्द प्राप्त रहेगा।

– बाबूराम शर्मा 'विभाकर'
52/2 लाल क्वार्टस, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मो.:– 9350451497

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल बचाओ हुंकार रैली का हुआ ऐतिहासिक आयोजन

और न ही आर्य समाज के कार्यों में कोई योगदान है ऐसे लोग गुरुकुल की पवित्रता को विनष्ट करने का कुचक्र रच रहे हैं। स्वामी जी ने इस पूरे षड्यन्त्र की सी.बी.आई. जांच कराने की मांगी की।

गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति के संयोजक स्वामी यज्ञमुनि सरस्वती जी ने कहा कि गुरुकुल की भूमि को बचाने की हम सबने अन्तिम अपील शासन–प्रशासन से कर दी है। यदि हमारी मांग नहीं मानी गई तो इसके लिए बड़ा आन्दोलन चलाया जायेगा।

इस अवसर पर हुंकार रैली में शामिल नेताओं ने सिटी मजिस्ट्रेट को एक ज्ञापन पत्र सौंपा जिसमें गुरुकुल की भूमि को बचाने के लिए पूर्ण जाँच करके मामले का निपटारा करने की माँग की गई है।

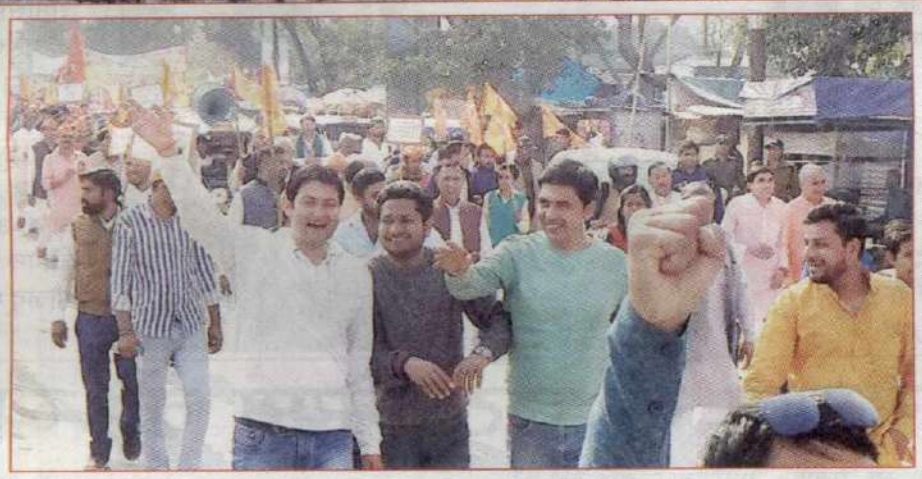

गुरुकुल का संक्षिप्त जीवन परिचय तथा अपील

पराधीन भारत के संकट को दूर करने के लिए मैकाले की शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के लिए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी ने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को सन् 1907 में स्थापित कर वैदिक संस्कृति, सभ्यता, आर्ष पद्धति और प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करके भारतीय संस्कृति पर जो उपकार किया है वह अविस्मरणीय है, क्योंकि यहां से भारत को स्वतंत्र कराने की दिशा मिली। यहीं से ही सदाचारी, त्यागी, तपस्वी, राष्ट्रभक्त एवं राजनेता उत्पन्न हुए। स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपना सर्वस्व न्यौछावर करके और अपनी झोली फैलाकर आये दान से गुरुकुल प्रणाली को क्रियान्वित और गतिमान करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।

वीतराग पूज्य स्वामी जी ने प्रजा के सात्विक दान से गुरुकुल बदायूं, सिकन्दराबाद, बिलारसी, मुरादनगर, वृन्दावन समेत अनेक गुरुकुलों की स्थापना कर क्रांति मचा दी थी। स्थापना दानदाता सब–इंस्पेक्टर बाबू सीताराम जी (रईस) ने 300 बीघा बहुमूल्य भूमि निःसंकोच स्वामी दर्शनानन्द जी के गुरुकुल महाविद्यालय सभा, ज्वालापुर के नाम कर उदारता का परिचय दिया था।

स्वामी दर्शनानन्द जी जीवन–पर्यन्त अन्तिम श्वांस तक राष्ट्र निर्माण में इस गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को अर्पित करके राष्ट्र को स्वर्णिम बनाते रहे जिसके परिणामस्वरूप महाविद्यालय से शिक्षित सैकड़ों मूर्धन्य विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी, राष्ट्रभक्त, समाजसेवी एवं राजनेता गुरुकुल का नाम रोशन करते रहे जिसमें उल्लेखनीय नाम दर्शनों के मर्मज्ञ राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित पं. उदयवीर शास्त्री, डॉ. सूर्यकान्त, आचार्य नन्दकिशोर, पूर्व सांसद कपिलदेव द्विवेदी, पं. प्रकाशवीर शास्त्री, पं. नरदेव जी शास्त्री, स्वामी रामानन्द शास्त्री, पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन आदि तन–मन–धन से राष्ट्र को समर्पित रहे।

वर्तमान में इस गुरुकुल में सैकड़ों ब्रह्मचारी विद्यार्जन कर रहे हैं। शिक्षा व्यवस्था के दृष्टिकोण से इस महाविद्यालय में संस्कृत विभाग, गुरुकुल विभाग, स्नातकोत्तर, योगाचार्य एवं योग डिप्लोमा। संस्कृत विभाग में प्रथमा से लेकर आचार्य पर्यंत एवं माध्यमिक विद्यालय में कक्षा–6 से कक्षा–10 तक की शिक्षा दी जा रही है। संस्था विश्वविख्यात गुरुकुल फार्मेसी एवं चिकित्सालय का भी संचालन बड़ी सुगमता से कर रही है। महाविद्यालय की गरिममयी ख्याति से प्रभावित होकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गाँधी, बाबू जगजीवन राम, पं. जवाहरलाल नेहरू, श्री मोरारजी देसाई, चौ. चरण सिंह, श्री चन्द्रशेखर, श्री लाल बहादुर शास्त्री एवं लाला लाजपत राय, श्री वी. सत्य नारायण रेड्डी, पं. गोविन्द बल्लभ पंत, पं. मोतीलाल नेहरू, महात्मा मुंशीराम आदि गणमान्य नेताओं ने अपने दान की आहुति करके गुरुकुल शिक्षा को राष्ट्र उन्नति का आधार स्वीकार कर प्रशंसा की थी। विश्वविख्यात नामी गिरामी हस्तियाँ गुरुकुल में आने के लिए स्वामी दर्शनानन्द जी से समय–समय पर सम्पर्क के लिए आतुर रहती थीं।

किन्तु आज उस महान तपस्थली एवं दर्शनीय गुरुकुल की पुण्य भूमि एवं आश्रमों की भूमि को अवांछनीय लोग कब्जा करना चाहते हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर पर कब्जा करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं और गुरुकुल की भूमि पर काम्प्लेक्स अपार्टमेंट, वैंकटहॉल एवं होटल आदि बनाकर गुरुकुल को बन्द करने के यत्न में बार–बार गुरुकुल पर कब्जे का प्रयास कर रहे हैं जिसके कारण गुरुकुल का शैक्षणिक कार्य बाधित हो रहा है। यह लोग परिसर में जबरन घुसकर धूम्रपान एवं अन्य मादक पदार्थों का सेवन करके गुरुकुल की पवित्रता को भी नष्ट कर रहे हैं जिसका दुष्प्रभाव विद्यार्थियों पर निरन्तर पड़ रहा है।

हम आर्य समाज के योगी, संन्यासी, समाजसेवी जन उत्तराखण्ड की सरकार से अपील करते हैं कि दिनांक 5 फरवरी, 2020 को गुरुकुल के कार्यालय तथा भवनों के ताले तोड़कर गुरुकुल की अस्मिता को ठेस पहुंचाया गया साथ ही अति प्राचीन यादगार वस्तुओं एवं अभिलेखों को भी गाड़ियों में भरकर चुरा ले गये। ऐसे अपराधियों के विरुद्ध तत्काल प्रभाव से कार्यवाही होनी चाहिए तथा इसकी सी.बी.आई. जांच अविलम्ब करानी चाहिए।

निवेदक
गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति हरिद्वार व
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सभी
शुभचिन्तक एवं समस्त आर्यजन

प्रो० विदुलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5, महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विदुलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।